प्रकाशनार्थ

पटना, 21 जून। दुनिया के अधिकांश उदारवादी लोकतंत्रों में बढ़ती निरंकुशता और राजनीतिक ध्रुवीकरण देखी जा रही है। भारत भी उनमें से एक है। हम यह भ्रम में रहते हैं कि अधिनायकवाद से भारत ग्रसित नहीं है। यह प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, यूएसए में लॉरेंस एस. रॉकफेलर विजिटिंग प्रोफेसर और प्रख्यात राजनीतिक विज्ञानी प्रोफेसर प्रताप भानु मेहता का आकलन था, जब वे **द क्राइसिस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव डेमोक्रेसी : इंडिया इन कम्पेरेटिव पर्सपेक्टिव** विषय पर आज आद्री द्वारा आयोजित तृतीय शैबाल गुप्ता स्मृति व्याख्यान दे रहे थे।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रोफेसर मेहता ने कहा कि 'फ्रांस, भारत, ईरान आदि जैसे देशों में प्रतिनिधि स्वरूप वाली सरकार की वैधता को न्यायोचित ठहराना मुश्किल हो रहा है और चीजें केवल सतह पर ही काम करती प्रतीत हो रही हैं।' स्वर्गीय डॉ. शैबाल गुप्ता के विचारों को दुहराते हुए उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की नींव वह होती है जब हम एक–दूसरे को स्वतंत्र और समान नागरिक के रूप में देखते हैं।

प्रोफेसर मेहता ने आगे कहा कि पूरी दुनिया में विधायिकाओं के अधिकार और जवाबदेही का पतन हो रहा है। भारत का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में अब वास्तव में एक राष्ट्रपति प्रणाली वाली सरकार है।' प्रेस की भूमिका पर उनका विचार था कि मीडिया निजी व्यावसायिक नियंत्रण के अधीन है और वे निर्धारित करते हैं कि कौन–सी जानकारी साझा की जानी है। हालांकि, सोशल मीडिया ने कुलीन तंत्र की ताकत को तोड़ते हुए आम नागरिकों को एक तरह से सशक्त बनाया है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की थी।

उन्होंने उल्लेख किया कि 1970 के दशक से सामाजिक आंदोलन गायब हो गए हैं। साथ ही, उन्होंने कहा कि जातिगत जनगणना के आंकड़ों से बहुत अधिक मूल्यवर्धन नहीं होगा।

पिछले 10–15 वर्षों में राज्य की क्षमता में वृद्धि होने के कारण राज्य अधिक प्रभावशाली हो गया है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रख्यात साहित्यकार प्रोफेसर अरुण कमल ने टिप्पणी की कि खंडित समाज में लोकतंत्र का होना संभव नहीं है। जाने–माने सर्जन डॉ. ए.ए. हई ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर मेहता को सम्मानित किया।

इससे पहले, आद्री की डा. अस्मिता गुप्ता (स्वर्गीय डा. शैबाल गुप्ता की पुत्री) ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया और धन्यवाद ज्ञापन भी किया। स्मृति व्याख्यान की भव्य सभा में शिक्षाविद, पदाधिकारी और सभी वर्गों के नागरिक समाज के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कुछ प्रमुख प्रतिभागियों में श्री निखिल कुमार (पूर्व राज्यपाल), श्री शिवानंद तिवारी, पूर्व सांसद, राज्य सूचना आयुक्त श्री त्रिपुरारी शरण, सहकारिता विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार सिंह और पटना कॉलेज के प्राचार्य श्री तरुण कुमार थे।

(अंजनी कुमार वर्मा)